भजन

तर्ज–रैना बीती जाए

पिया समझाए समझ न आए
कैसी बनी आए

1–रुह की न्यारी होती है रहनी
प्यार भरा दिल पिया की दीवानी रे
पिया को रिझाए

2–जब लग रूह को होश नही था
रूह सिर कोई दोष नही था
अब क्यों भुलाए

3–जिस रूह पे है मेहर पिया की रे
वो रूह अपना आप छिपाए
छिप नही पाए